

(चौपाई)

उत्तम छिमा जहाँ मन होई, अन्तर-बाहिर शत्रु न कोई।  
उत्तम मार्दव विनय प्रकासे, नाना भेद ज्ञान सब भासे॥  
उत्तम आर्जव कपट मिटावे, दुर्गति त्यागि सुगति उपजावे।  
उत्तम शौच लोभ-परिहारी, सन्तोषी गुण-रतन भण्डारी॥  
उत्तम सत्य-वचन मुख बोले, सो प्रानी संसार न डोले।  
उत्तम संजम पाले ज्ञाता, नर-भव सफल करै, ले साता॥  
उत्तम तप निरवांछित पाले, सो नर करम-शत्रु को टाले।  
उत्तम त्याग करे जो कोई, भोगभूमि-सुर-शिवसुख होई॥  
उत्तम आकिंचन व्रत धारे, परम समाधि दशा विसतारे।  
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावे, नर-सुर सहित मुक्ति-फल पावे॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्येति  
दशलक्षणधर्माय जयमालापूर्णाध्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

करै करम की निरजरा, भव पींजरा विनाशि।  
अजर अमर पद को लहै, 'द्यानत' सुख की राशि॥  
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् )

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।  
कर ऊपर कर सुभग विराजै, आसन थिर ठहराया है॥टेक॥  
जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।  
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा दृष्टि सुहाया है॥१॥  
कंचन वरन चले मन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।  
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नशाया है॥२॥  
शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।  
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआँ उड़ाया है॥३॥  
जीवन-मरन अलाभ-लाभ जिन, सबको नाश बताया है।  
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है॥४॥